डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

स्नातक पाठ्यक्रम के उद्देश्य एवं सीखने के परिणाम

सी.बी.सी.एस.

दर्शनशास्त्र विभाग (कोड–24)

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययन शाला (कोड–20)

2021–22

स्नातक पाठ्यक्रम

Semester	Nature of Course	Course Name with code	L T P C
Sem.-I	Core Course – I	PHL-CC-111 भारतीय दर्शन	5 1 0 6
Sem.-II	Core Course – II	PHL-CC-211 पाश्चात्य दर्शन	5 1 0 6
Sem.-III	Core Course – III	PHL-CC-311 तर्कशास्त्र (पाश्चात्य)	5 1 0 6
	SE	PHL-SE-311 भारतीय दर्शन के मूलाधार	2 0 0 2
Sem.-IV	Core Course – IV	PHL-CC-411 नीतिशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य)	5 1 0 6
	SE	PHL-SE-411 योग दर्शन	2 0 0 2
Sem.-V	EC	PHL-EC-511 : धर्म दर्शन	5 1 0 6
	EC	PHL-EC-512 : समाज दर्शन	5 1 0 6
	GE	PHL-GE -511 : तर्कशास्त्र और वैज्ञानिक पद्धतियाँ	5 1 0 6
	SE	PHL-SE-511 : मानवीय व्यवहार में नैतिकता	2 0 0 2
Sem.-VI	EC	PHL-EC-611 : भारतीय तर्कशास्त्र	5 1 0 6
	EC	PHL-EC-612 : बौद्ध दर्शन	5 1 0 6
	GE	PHL-GE-611 : धर्म एवं धार्मिक सामंजस्य	5 1 0 6
	SE	PHL-SE-611 : आगमनात्मक तर्कशास्त्र	2 0 0 2

प्रथम सेमेस्टर

सेमेस्टर	कोर्स का प्रकार	कोर्स का कोड एवं नाम	L T P C
सेमेस्टर – I	कोर कोर्स – I	PHL-CC-111 **भारतीय दर्शन**	5 1 0 6

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. स्नातक प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को भारतीय दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों, उनकी विशेषताओं तथा उनकी विचार प्रणाली से परिचय कराना।
2. भारतीय दर्शनों की ज्ञानमीमांसा, एवं तत्वमीमांसीय अवधारणाओं से अवगत कराना।
3. प्रतियोगी परीक्षाओं में पूँछे जाने वाले दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित प्रश्नों के सही उत्तर देने हेतु विद्यार्थियों को तैयार करना।
4. भारतीय दर्शनों की समृद्ध ज्ञान परम्परा के प्रति विद्यार्थियों में गौरव–बोध पैदा करना।

परिणाम :

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर :

1. विद्यार्थियों की भारतीय दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों व सामान्य विशेषताओं के प्रति समझ बड़ेगी।
2. ज्ञानमीमांसा एवं प्रमुख दर्शनों के कारणता सम्बन्धी सिद्धान्तों के अध्ययन से तार्किक व दार्शनिक दृष्टि तेज होगी।
3. सत्ता के सिद्धान्तों के अध्ययन से ब्रह्म, माया, जगत, आत्मा, पदार्थ आदि सत्ताओं के प्रति भारतीय दर्शन की दृष्टि से समझने में सहायता मिलेगी।
4. यह प्रश्नपत्र विद्यार्थी के चिन्तन को कहीं न कहीं प्रभावित करने वाला होगा जिसकी परिणति उसके कौशल विकास एवं समंजस्य सांस्कृतिक बोध में होगा।
5. विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय दर्शन से सम्बन्धी प्रश्नों के सही उत्तर देने के लिए तैयार होंगे, जो उनके केरियर के लिए सहायक हो सकेगा।

द्वितीय सेमेस्टर

सेमेस्टर	कोर्स का प्रकार	कोर्स का कोड एवं नाम	L T P C
सेमेस्टर – II	कोर कोर्स – II	PHL-CC-211 **पाश्चात्य दर्शन**	5 1 0 6

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :
इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य परम्परागत पाश्चात्य दर्शन के कुछ प्रमुख दार्शनिकों के कुछ प्रमुख सिद्धान्तों से स्नातक में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अवगत कराना है। विद्यार्थियों में पाश्चात्य दर्शन के विभिन्न वादों के प्रति आलोचनातमक समझ पैदा करना तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से छात्रों में तार्किक समझ को उन्नत करना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

परिणाम :
इस पाठ्यक्रम का सफलतापूर्वक अध्ययन पूर्ण करने पर
1. विद्यार्थी पाश्चात्य दर्शन के विचारकों, यथा प्लेटो, अरस्तू के दार्शनिक चिन्तन से भिज्ञ हो सकेंगे। साथ ही पाश्चात्य दर्शन के बुद्धिवाद, अनुभववाद सन्देहवाद व समीक्षात्मक सिद्धान्तों को समझकर पश्चिमी दर्शन के ग्रीक युग एवं आधुनिक युग के विकासमान धारा की समझ विद्यार्थियों में विकसित हो सकेगी। इससे विद्यार्थियों की तार्किक चिन्तन की क्षमता में विकास होगा।
2. प्रतियोगी परीक्षाओं में पूँछे जाने वाले पाश्चात्य दर्शन से सम्बन्धित प्रश्नों को हल करने में यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों के लिए सहायक होगा।

तृतीय सेमेस्टर

सेमेस्टर	कोर्स का प्रकार	कोर्स का कोड एवं नाम	L T P C
सेमेस्टर – III	कोर कोर्स – III	PHL-CC-311 **तर्कशास्त्र (पाश्चात्य)**	5 1 0 6

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :
विद्यार्थियों को तार्किक चिन्तन प्रणाली से अवगत कराना, भाषा अभिव्यक्ति के तार्किक दोषों से परिचित कराना व वस्तुनिष्ठ विचार की प्रक्रिया से परिचित कराना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है। तर्कशास्त्र के आधारभूत नियमों का ज्ञान यदि विद्यार्थियों को होगा; तो उसकी तर्कशक्ति एवं आलोचनात्मक चिन्तन की क्षमता का विकास हो सकेगा। साथ ही साथ वस्तुस्थिति के वैज्ञानिक समझ हेतु भी यह पाठ्यक्रम सहायक होगा।

परिणाम :

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त :

1. विद्यार्थियों की बौद्धिक एवं तार्किक क्षमता का विकास होगा।
2. भषा अभिव्यक्ति में दोषों का परिहार होगा।
3. प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यार्थी तर्कशक्ति से सम्बन्धित प्रश्नों का सही उत्तर दे सकेंगे और साथ ही साथ सामान्य जीवन में भी जटिल परिस्थितियों का तार्किक विश्लेषण कर उचित निर्णय तक पहुँच सकेंगे।

तृतीय सेमेस्टर

सेमेस्टर	कोर्स का प्रकार	कोर्स का कोड एवं नाम	L T P C
सेमेस्टर – III	स्किल इन्हेंसमेन्ट कोर्स – III	PHL-SE-311 **भारतीय दर्शन के मूलाधार**	2 0 0 2

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :
इस पाठ्क्रम का उद्देश्य भारतीय दर्शन और ज्ञान परम्परा की मूलभूत समझ के आधार पर विद्यार्थियों में संस्कृतिनिष्ठ मूल्यात्मक बोध और जीवन जीने की कला को विकसित करना है।

परिणाम :
इस पाठ्यक्रम का सफलतापूर्वक अध्ययन करने से दर्शन एवं दर्शनेत्तर विषयों का अध्ययन कर रहे छात्रों में भारतीय दर्शन की एक विहंगम समझ विकसित हो सकेगी। इसीलिए इस पाठ्यक्रम में ज्ञान के साधन, ज्ञान की प्रामाणिकता व अप्रामाणिकता तथा आत्मन की अवधारणा के साथ–साथ भगवतगीता क नैतिक चिन्तन को सम्मलित किया गया है।

बी.ए. – चतुर्थ सेमेस्टर

सेमेस्टर	कोर्स का प्रकार	कोर्स का कोड एवं नाम	L T P C
सेमेस्टर – IV	कोर कोर्स – IV	PHL-CC-411 **नीतिशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य)**	5 1 0 6

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भारतीय एवं पाश्चात्य नैतिक चिन्तन से सम्बन्धित मूलभूत अवधारणाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना है। साथ ही साथ इस समझ को भी पैदा करना है कि पश्चिमी नैतिक चिन्तन का आरम्भ मनोवैज्ञानिक सुखवाद से विकसित होकर किस प्रकार नैतिक सुखवाद व फल निर्पेक्षतावादी नैतिक चिन्तन में होता है। पश्चिमी नैतिक चिन्तन के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में भगवतगीता एवं श्रमण परम्परा के नैतिक चिन्तन से विद्यार्थियों को परिचित कराना इस पाठ्यक्रम का विशेष उद्देश्य है।

परिणाम :

आज पूरी दुनियाँ में मोरल–एकरेसिया (नैतिक तटस्थता) की समस्या उत्तरोत्तर गंभीर होती जा रही है। अतः इस पाठ्यक्रम का सफलतापूर्वक अध्ययन करने से विद्यार्थियों में नैतिक चेतना का विकास हो सकेगा और साथ ही साथ संस्कृतिनिष्ठ नैतिकता के प्रति प्रतिबद्धता समुन्न्त हो सकेगी। उच्च प्रशासनिक सेवा से सम्बन्धित प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से भी यह पाठ्यक्रम उपयोगी है।

बी.ए. – चतुर्थ सेमेस्टर

सेमेस्टर	कोर्स का प्रकार	कोर्स का कोड एवं नाम	L T P C
सेमेस्टर – IV	स्किल इन्हेंसिव कोर्स – IV	PHL-SE-411 **योग दर्शन**	2 0 0 2

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भारत की प्राचीन योग विद्या, विशेषकर पातंजल योग, के बहिरंग एवं अन्तरंग साधनों से विद्यार्थी को परिचित कराते हुए योग दर्शन की सैद्धान्तिक समझ व जीवन दर्शन से अवगत कराना है।

परिणाम :

इस पाठ्यक्रम का सफलतापूर्वक अध्ययन करने से छात्र अपने अन्तर्गत के मनोदैहिक विकारों को विश्लेषित करने में सक्षम हो सकेगा। साथ ही साथ चितशुद्धि किस प्रकार स्वस्थ एवं सकारात्मक जीवन के लिए आवश्यक है, इसके प्रति स्वयं ही जागरूक हो सकेगा।

UG - Vth Semester

PHL-EC-511 : धर्म–दर्शन (क्रेडिट –6)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य धर्मों के प्रति दार्शनिक समझ को विद्यार्थियों में विकसित करना है। साथ ही साथ किसी भी धर्म के मूलभूत तत्त्वों जैसे धार्मिक विश्वास का स्वरूप, ईश्वर के तात्विक एवं नैतिक गुणों, आत्मा की अमरता अशुभ की समस्या और जीवन के चरम लक्ष्य इत्यादि से विद्यार्थियों को अवगत कराना है।

परिणाम :

इस पाठ्यक्रम का सफलतापूर्वक अध्ययन करने से छात्रों को धार्मिक अन्धविश्वास, परम्पराओं और रूढिवाद से उनकी चेतना मुक्त हो सकेगी और धार्मिक सहिष्णुता एवं सद्भावपूर्वक जीवन जीने की समझ व कला विकसित हो सकेगी।

PHL-EC-512 : समाज दर्शन (क्रेडिट – 6)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :
इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य सामंजस्यपूर्ण सामाजिक जीवन जीने के लिए जरूरी समानता, सामाजिक व्याधियों एवं अपराध तथा दंड के नियामक सिद्धान्तों से विद्यार्थियों को परिचित कराना है। भारतीय सामाजिक चिन्तन यथा स्वामी विवेकानन्द, गाँधी एवं अम्बेडकर के समाज एवं दार्शनिक चिन्तन से छात्रों को परिचित कराना इस पाठ्यक्रम का विशेष उद्देश्य है।

परिणाम :

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने से विद्यार्थयों में सामाजिक विकृतियों, जाति–भेद एवं लिंगपरक भेद–भाव के प्रति जागरूकता बढेगी तथा स्वतंत्रता, समानता एवं सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों के प्रति विद्यार्थी आत्मचेतन हो सकेगा।

PHL-GE -511 : तर्कशास्त्र और वैज्ञानिक पद्धतियाँ (क्रेडिट –6)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :
विद्यार्थियों में तार्किक चिन्तन का प्रसार एवं सुधार करना। प्रतियोगी परीक्षाओं में तर्कशक्ति परीक्षा एक आवश्यक अंग है। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता दिलाने में सहायक होना भी इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है। आगे अनुसंधान में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों को भी आगमनात्मक पद्धतियों से अवगत कराना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

परिणाम :
इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर विद्यार्थी :

1. विद्यार्थियों में सूक्ष्म एवं तार्किक चिन्तन की क्षमता का विकास होगा।
2. विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्ति में सहायक होगा।
3. आगे अनुसंधान करने वाले विद्यार्थयों को अनुसंधान प्रवधि के चयन में यह पाठ्यक्रम सहायक होगा।

PHL-SE-511 - **मानवीय व्यवहार में नैतिकता** (क्रेडिट : 2)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :
इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक प्रत्ययों, नैतिक निर्णयन की प्रक्रिया का बोध कराना व जनक्षेत्र की नैतिक समस्याओं जैसे इच्छा मृत्यु, जाति–भेद, दहेज–प्रथा, अस्पृश्यता एवं मानवीय असमानता के वर्तमान में बहस के प्रमुख मुद्दों के प्रति समझ पैदा करना और इनके मूल कारणों से अवगत कराना है।

परिणाम :
इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर विद्यार्थियों में नैतिक प्रत्ययों जैसे उचित, शुभ, अशुभ, कर्तव्य, दायित्व, निष्पक्ष न्याय आदि के सम्बन्ध में गहरी समझ विकसित हो सकेगी। जाति–भेद, अस्पृश्यता, दहेज–प्रथा, एवं इच्छा मृत्यु जैसे मानवीय मुद्दों के सम्बन्ध में सजग हो सकेंगे। साथ ही साथ उनके आचरण में सुधार होने की प्रेरणा उत्पन्न हो सकेगी। यह पाठ्यक्रम उनके कौशल विकास में भी सहायक हो सकेगा।

UG - VIth Semester

PHL-EC-611 : **भारतीय तर्कशास्त्र** (क्रेडिट –6)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :
स्नातक के विद्यार्थियों को भारतीय दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों में निहित (विशेषतः न्याय, बौद्ध एवं चार्वाक दर्शन में) तर्कशास्त्र/अनुमान के विभिन्न पक्षों से अवगत कराना जिसमें उनकी तार्किक क्षमता में विकास हो सके।

परिणाम :

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर :

1. विद्यार्थी भारतीय तर्कशास्त्र की विशिष्टता एवं महत्त्व को समझते हुए पाश्चात्य तर्कशास्त्र से इसका भेद समझने में सक्षम होंगे।
2. विद्यार्थी भारतीय तर्कशास्त्र में निहित अनुमान से सम्बन्धित नियमों व दोषों से परीचित होंगे, जिससे उनकी तार्किक चिन्तन की क्षमता में विकास होगा। जो उनके कौशल विकास में अभिवृद्धि करेगा।
3. प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को तर्कशक्ति सम्बन्धी प्रश्नों को हल करने में यह पाठ्यक्रम सहायक होगा। जो रोजगारपरक सिद्ध होगा।

PHL-EC-612 : बौद्ध दर्शन (क्रेडिट –6)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य बौद्ध धर्म एवं दर्शन के सम्बन्ध में छात्रों में समझ विकसित करना है। साथ ही साथ इसके विभिन्न मूलभूत सिद्धान्त जैसे चार आर्य सत्य, अनात्मवाद, क्षणिकवाद, प्रतीत्यसमुत्पाद, पंचशील षड्पारमिताएँ आदि तात्विक एवं नैतिक सिद्धान्त जो एक साधारण मनुष्य से बुद्ध तक की यात्रा को प्रस्तुत करते हैं, इनसे विद्यार्थियों को अवगत कराना है।

परिणाम :

इस पाठ्यक्रम का सफलतापूर्वक अध्ययन करने से छात्र श्रमण परम्परा के तात्विक एवं मानवीय मूल्यात्मक अवधारणाओं से परिचित हो सकेंगे। साथ ही साथ छात्रों में कार्य–कारण सम्बन्ध पर आधारित दार्शनिक एवं वैज्ञानिक सिद्धान्त के रूप में क्षणिकवाद, अनात्मवाद एवं मुख्य रूप से प्रतीत्यसमुत्पाद आदि सिद्धान्त के सम्बन्ध में समझ विकसित हो सकेगी।

PHL-GE-611 धर्म एवं धार्मिक सामंजस्य (क्रेडिट –6)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :
आज धर्म के नाम पर अंधी दौड़ है। ऐसे दौर में विद्यार्थियों को धर्म का सही अर्थ, स्वरूप एवं महत्त्व का ज्ञान कराना। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ज्वलंत धार्मिक समस्याओं के विषय में समझ विकसित करना एवं संसार में व्याप्त इन धार्मिक समस्याओं से छुटकारा दिलाने वाले प्रमुख विचारकों के विचार व अन्य सिद्धान्तों को समझना जिसमें प्रमुख रूप से सार्वभौम धर्म, सर्वधर्म सद्भाव, धार्मिक सहिष्णुता एवं धर्म निरपेक्षता को भारतीय एवं पाश्चात्य सन्दर्भ में समझना।

परिणाम :
इस पाठ्यक्रम को पूरा करने पर विद्यार्थी :

1. विधार्थी धर्म के सही अर्थ व स्वरूप को समझकर इसके महत्त्व को समझेंगे। मानव जीवन में धर्म का स्थान और महत्ता को समझकर दूसरे धर्मों के प्रति भी सकारात्मक भाव पैदा होगा।
2. धार्मिक समस्याओं के सम्बन्ध में गहरी समझ विकसित होगी तथा सार्वभौम धर्म, सर्वधर्म सद्भाव की भारतीय दृष्टि एवं पाश्चात्य धार्मिक सहिष्णुता और धर्म निरपेक्षता की अवधारणा को समझेंगे।
3. लोक–कल्याण के लिए इन भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणाओं को विद्यार्थी आत्मसात कर समाज में प्रसारित कर सकेंगे।

PHL-SE-611 : आगमनात्मक तर्कशास्त्र (क्रेडिट –2)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के तार्किक कौशल एवं आलोचनात्मक विचार क्षमता का विकास करना है। जो कुछ प्रस्तुत नहीं है उसे अनुमान के द्वारा कैसे एक सही सामान्य निष्कर्ष या नियम पर पहुँचें, उसकी वैज्ञानिक ढंग से कैसे व्याख्या कर सकें – यह इस पाठ्यक्रम को पढ़ाने का उद्देश्य है।

परिणाम :

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन सफलतापूर्वक करने के उपरान्त विद्यार्थियों में

1. विशेष घटनाओं व कार्यों को देखकर सामान्य निष्कर्ष एवं किसी घटना के कारणात्मक पृष्ठभूमि को ज्ञात करने की क्षमता में विकास होगा।
2. यह पाठ्यक्रम अनुसंधान प्रविधि के रूप में विद्यार्थियों के उच्च अध्ययन में सहायक होगा।
3. विद्यार्थियों के व्यावहारिक जीवन में किसी वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष पर पहुँचने में इस प्रश्नपत्र का अध्ययन सहायक होगा।
4. यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के बौद्धिक व तर्कणा शक्ति के विकास में सहायक होगा।